तीसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चो !! आज के सत्र में हम शंकराचार्य जी की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हैं ।

25 जनवरी के अध्याय में हमने जाना की किस प्रकार शंकराचार्य जी के जाने के कई शताब्दियों बाद सुरेश्वरआचार्य ने गुरु की सेवा पूरी करने के लिए पुनर्जन्म लिया और ब्रह्मसूत्र और 30 वर्षों के अथक प्रयास से उन्होंने ब्रह्म सूत्र पर टीका की सेवा पूरी की।

अब हम वापस आते हैं शंकराचार्य जी के युग में पद्मपाद और अन्य शिष्यों ने गुरुदेव शंकराचार्य जी के निर्णय को अनुचित बताया और ब्रह्मसूत्र के भाष्य पर टीका लिखने की सेवा सुरेश्वरआचार्य जी से स्वयं ले ली। गुरुदेव के निर्णय पर शंका करने, गुरु भाई के ऊपर ईर्ष्या करने और गुरु भाई की सेवा स्वयं लेने का क्या परिणाम हुआ यह हम जानेंगे आज की कहानी में|

उसके बाद हम जानेंगे सांप सीढ़ी का खेल किसने शुरू किया और इसका आध्यात्मिक महत्व क्या है? फिर बारी आएगी एक ऐसे ही योगासन की जिसको करने से पेट, छाती, कमर, पीठ, गरदन, गले और फेफड़ों के सभी रोग दूर होते हैं । स्वास्थ्य सुरक्षा में हम आपको बताएंगे की डिहाइड्रेशन से बचने के लिए क्या करना चाहिए?

इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न, भजन और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे- भगवान की भक्ति का फल क्या होता है? तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क मे रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती-फुर्ती मे मदद मिलेगी।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

अब हम सभी बच्चे भगवती सरस्वती की वंदना करेंगे - (लिंक :- https://youtu.be/DySzqHwNCxU)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी

कहानी - पद्मपाद की तीर्थ यात्रा - भाग-1

पद्मपाद ने ब्रह्मसूत्र टीका की सेवा तो स्वयं ले ली थी, परंतु शंकराचार्य जी ने अन्य ग्रथों के रचना की सेवा सुरेश्वराचार्य जी को दे दी थी ।

सुरेश्वराचार्य जी ने उन सभी ग्रथों को तय समय से पहले पूरा कर लिया, तब अन्य शिष्यों को भी विश्वास हो गया की उन्होंने सुरेश्वराचार्य जी के ज्ञान पर व्यर्थ ही संदेह किया और गुरु की आज्ञा और निर्णय में हस्तक्षेप करके एक अपराध भी किया है । पद्मपाद को बहुत पश्चाताप होने लगा, उनका मन अशांत रहने लगा, उनकी बुद्धि विचलित हो गई ।

वह गुरुदेव के पास आया और क्षमा याचना करते हुए बोला - गुरुदेव मेरा मन बहुत अशांत है, मैंने आपके निर्णय में शंका करके अपराध किया है, इसके प्रायश्चित हेतु मैं अब तीर्थ यात्रा करना चाहता हूं ।

शंकराचार्य जी - पद्मपाद, तुम तो विद्‌वान हो और जानते हो कि तीर्थ करना तो प्रारंभिक साधना है, तुम गुरु के सानिध्य की सर्वोत्तम साधना छोड़कर मंदिर मूर्ति तीर्थालय में कौन सी साधना करोगे? जिन्हें ब्रह्मज्ञानी गुरु मिलते हैं उनकी साधना तो परमात्मा का साक्षात्कार करने तक की होती है फिर उन्हें तीर्थ की लालसा छोड़ देनी चाहिए ।

शंकराचार्य जी ने उन्हें बहुत समझाया परंतु पद्मपाद अपने तीर्थाटन करने के आग्रह पर अड़े रहे ।

तब शंकराचार्य जी ने कहा - पद्मपाद, तुमने पहले भी मेरे मत का विरोध किया था, इसलिए तुम्हें पश्चाताप हो रहा है, परंतु तुम अभी भी वही कर रहे हो । मेरी तुम्हें तीर्थ जाने देने की आज्ञा नहीं है, तुम अपने मन के अनुकूल ही जिद कर रहे हो । तुमने पहले ही मेरे मत का विरोध किया था, तभी तुम्हारी बुद्धि उचित निर्णय नहीं ले रही है और तुम्हें गुरु के सानिध्य से तीर्थ श्रेष्ठ प्रतीत हो रहा है । फिर भी यदि तुमने निर्णय कर ही लिया है, तो जाओ परंतु याद रखना यह मेरी आज्ञा नहीं है, यह तुम्हारा स्वतंत्र निर्णय है । जिस प्रकार माता-पिता को अपने पुत्र की चिंता होती है, मुझे भी तुम्हारी चिंता है, इसलिए मेरे कुछ वचनों को याद रखना तो तुम्हारा अहित होने से बच जाएगा । जो मार्ग सबसे सुरक्षित हो, जहां साधारण लोग आते जाते हो उसी मार्ग से तुम यात्रा करना । जहां तुम्हारा परिचय हो, रिश्ते-नाते हो वहां बिल्कुल भी मत जाना, विशेषकर एक स्थान पर अधिक दिनों तक मत रहना, साधु संगति करना, तीर्थ यात्रा करना और शीघ्र वापस चले आना ।

पद्मपाद गुरुदेव की बात सुनकर उन्हें प्रणाम करके तीरथ के लिए निकल गए, उन्होंने साथ में वह ब्रह्म सूत्र की टीका भी ले ली जिस पर वह कार्य कर रहे थे । पद्मपाद उत्तर दिशा से कई धाम, संगम, ज्योतिर्लिंग आदि तीर्थ करते-करते दक्षिण की तरफ चोल प्रदेश पहुंचे, जिसे आज तमिलनाडु कहते

हैं । वहां से वह रामेश्वरम की यात्रा के लिए जाना चाहते थे । परन्तु चोल प्रदेश उनकी अपनी मातृभूमि थी, वहीं पास में उनके मामाँ का गांव था । उन्होंने सोचा की इतने वर्षों बाद अपने गांव आया हूं तो मामा से मिलता हुआ चलूँ ।

वो जैसे ही मामा के घर पहुंचे, सबने उन्हें बहुत स्नेह और सत्कार किया । आसपास बस्ती के लोग इकट्ठे हो गए, सब ने कहा अरे सनंदन (पहले उनका नाम सनंदन ही था, पद्मपाद नाम आचार्य शंकर ने बाद में रखा था), सब ने कहा अरे सनंदन तुम तो काशी विद्‌याअध्यन करने गए थे और वहीं पर सन्यास ग्रहण कर लिया, अब तो बहुत बडे ज्ञानी और विद्‌वान हो गए हो, इतने वर्षों बाद आप आज इस धरती पर हमारे पास आए हो, हमारी विनती है कि यहां कुछ दिन निवास करो, हम लोगों को कुछ उपदेश दो, ताकि हमारा भी भला हो जाये ।

उन लोगों के आग्रह पर वे मामा के यहां पर निवास करने लगे । वे यह भूल ही गए थे कि गुरुदेव ने जाते समय कहा था कि किसी परिचित के घर मत जाना और एक स्थान पर अधिक दिनों तक मत रहना । परंतु वे वहां पर रहकर उपदेश करने लगे, लोग जो कुछ भी खाने के लिए लाते वे उन्हें ग्रहण करते, लोग उन्हें प्रणाम करते, उपहार रखते और उनकी जय जयकार करते, इस प्रकार कई दिन बीत गए ।

फिर आगे क्या हुआ जानेंगे अगले सत्र में...

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - सदगुरुदेव भगवान जी की जय।

4. साखी

मैं बालक तेरा प्रभु ! जानू न योग न ध्यान...
गुरुकृपा मिलती रहे, दे दो यह वरदान !!

5. ज्ञान का चुटकुला

चिंटू- पंडित जी यह मेरी कुंडली देखकर कुछ बताइए ।

पंडित - चिंटू तुम्हारी कुंडली में बहुत धन है।

चिंटू - वो तो सब ठीक है पंडित जी, लेकिन यह बताइए कि कुंडली का यह धन मेरे बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कैसे होगा?

सीख :- पुरुषार्थ करना चाहिए, भाग्य के सहारे बैठे रहना नहीं चाहिए |

6. संस्कृति सुवास

सांप-सीढ़ी खेल का आध्यात्मिक अर्थ

बच्चों, आप सब सांप सीढ़ी तो जरूर खेलते होंगे, पर क्या आपको पता है इस खेल का आविष्कार कहां हुआ था?

इस खेल का आविष्कार प्राचीन भारत में हुआ था। सदियों पहले इसे 'ज्ञान चौपड़' के नाम से भी जाना जाता था। इसका अर्थ है 'ज्ञान का खेल'। आगे चलकर महाराष्ट्र के संत ज्ञानदेव ने इस खेल में कुछ परिवर्तन करके इसका नाम दिया 'मोक्षपटम'। कालांतर में इसमें कई फेरबदल किए जाने लगे और नाम का सरलीकरण करके इसका नाम सांप-सीढ़ी रख दिया गया। इस खेल के आविष्कार करने के पीछे का मुख्य उद्देश्य था 'बच्चों को नैतिक मूल्य सिखाते हुए मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य की ओर अग्रसर करना।' आईए जानते हैं, क्या है इसका आध्यात्मिक अर्थ ?

इस खेल में 1 से लेकर 100 तक के चोकोर घर बने होते हैं। उनमें पहला घर जन्म का होता है और सबसे आखिरी 100 नंबर का घर मोक्ष का होता है। जब खेलते हैं तो पाशे में केवल एक आने पर ही गोटी खुलती है- इसका अर्थ यह हुआ कि कई प्रयासों के बाद जीव को यह कीमती मनुष्य जन्म मिलता है, जिसका उद्देश्य होता है आखिरी 100 नंबर तक पहुंचना- अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करना। खेल में ढेर सारे साँप और सीढ़ियाँ बनी होती हैं- अर्थात मोक्ष की प्राप्ति में कई

बाधाएं आती है, जिन्हें सांप के रूप में दर्शाया गया है और कई सुगम मार्गों को सीढ़ियों के रूप में दर्शाया गया है। जैसे यदि कोई क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, किसी का अहित करना, अशुद्ध रहना, झूठ बोलना, नशा करना, चोरी करना, ना करने योग्य कर्म करना, किसी जीव को बिना कारण ही सताना, यदि व्यक्ति ऐसा करता है तो वह अपनी आध्यात्मिक स्थिति से नीचे गिर जाता है- अर्थात उसे सांप काट जाता है और वह नीचे आ जाता है जिस कारण मोक्ष प्राप्ति में अधिक समय लगता है। जबकि सत्संग, भगवन नाम का जप, सत्य का आचरण, संयम, विवेक, वैराग्य, धर्म पालन, दान, दया, परोपकार, पवित्र आचरण करने पर तथा ब्रह्ममुहूर्त, संध्याकाल, होली, दीपावली, जन्माष्टमी आदि महत्वपूर्ण तिथियां पर भगवान और गुरुदेव की पूजा और सत्कर्म करने का लाखों गुना फल प्राप्त होता है और वह व्यक्ति शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति करता है- अर्थात सीढ़ियां चढ़ता है और जल्दी मोक्ष के करीब पहुंच जाता है। खेल में आखिरी 100 नंबर से थोड़ा पहले एक बड़ा सा सांप होता है, जो अहंकार का प्रतीक होता है। यदि किसी व्यक्ति में अहंकार आ जाता है तो उसकी सारी आध्यात्मिक कमाई नष्ट हो जाती है

और वह पुन: नीचे गिर जाता है। परंतु यदि कोई ईश्वर की शरण आकर उस अहंकार रूपी बड़े सांप से भी बच जाता है तो वह 100 नंबर पर पहुंचकर खेल से बाहर हो जाता है - अर्थात मोक्ष पाकर जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। यही ज्ञान समझाने के लिए भारत के परोपकारी ब्रह्मज्ञानी संतों ने खेल-खेल में ही बच्चों के नैतिक विकास के लिए सांप-सीढ़ी का आविष्कार किया था।

देखा बच्चों, कितने दूरदर्शी महान और उन्नत विवेक के धनी होते हैं भारत के परोपकारी संत।

7. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है- " निम्नलिखित में से किसे घोड़े की रकाब में पैर डालते डालते ब्रह्म ज्ञान हो गया?" विकल्प है -

[a]राजा जनक [b] शुकदेव जी

[c]अष्टावक्र जी [d] याज्ञवल्क्य जी

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा.

8. योगामृत

बच्चों, क्या आप नहीं चाहते हो कि आपका शरीर हष्ट पुष्ट और बलवान रहे, जल्दी थकान ना हो, मांसपेशियां मजबूत हो । यदि हां, तो आपको यह योगासन जरुर करना चाहिए । इस आसन को करते समय शरीर का आकार हल जैसा बनता है, इसलिए इसको हलासन कहा जाता है। यह जानते हैं इसे कैसे करें ।

सबसे पहले भूमि पर बिछे हुए आसन पर लेट जाएँ। दोनों पैरों को एक साथ धीरे-धीरे ऊँचे करते जायें। आकाश की ओर पूरे उठाकर फिर पीछे सिर के तरफ झुकायें। पैर बिल्कुल तने हुए रखकर पंजे ज़मीन पर लगायें। ठोड़ी छाती से लगी रहे। यह हो गया हलासन । शुरुआत में इसे 1-2 मिनट से करते हुए धीरे-धीरे समय बढ़ाना चाहिए ।

यह आसन करने से पेट, छाती, कमर, पीठ, गरदन, गले और फेफड़ों के सभी रोग दूर होते हैं । लिवर अच्छा होता है, रक्त शुद्ध बनता है, पेट की चरबी कम होती है, सिरदर्द दूर

होता है। खराब विचार बन्द होते हैं। नाड़ी तंत्र शुद्ध होता है। भोजन जल्दी पचकर सप्त रस बनता है, दमा, कफ, थायराइड और वीर्यविकार निर्मूल होता है। छाती का विकास होता है, रीढ़ लचीली बनती है, यह आसन रोज करने से जल्दी बुढ़ापा नहीं आता है । शरीर बलवान और तेजस्वी बनता है ।

9) भजन

अब हम गाएंगे गुरुनिष्ठा बढ़ानेवाला भजन - शरणं गुरु की सार
https://youtu.be/e-sKkNTGTD4?t=12

10) स्वास्थ्य सुरक्षा

बच्चों, अब गर्मी का मौसम शुरू होने वाला है, इस मौसम में सबसे अधिक बीमारियां शरीर में पानी की कमी से होती है, जिसे डॉक्टर लोग डिहाइड्रेशन करते हैं । डिहाइड्रेशन से बचने के लिए क्या करना चाहिए आइये जानते हैं-

- भोजन में रोटी-सब्जी चावल आदि चाहे तो कम कर सकते हैं, परंतु सलाद का सेवन जरूर करना चाहिए ।

- इससे शरीर को जलीय अंश के साथ-साथ आवश्यक न्यूट्रिएंट भी मिल जाते हैं ।
- दिन में संतरा, तरबूज, अंगूर जैसे रस युक्त मौसमी फलों का सेवन करना चाहिए ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bI57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे-

भगवान की भक्ति का फल क्या - भाग-1

https://youtu.be/EBiJRtJjdZg?list=PLE4918C898F159959 [Play time - till 9:00]

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- पद्मपाद की बुद्धि क्यों विचलित हो गई?

- पद्मपाद तीर्थ यात्रा क्यों करना चाहते थे?
- आचार्य शंकर ने पद्मपाद को तीर्थ यात्रा करने की आज्ञा क्यों नहीं दी?
- तीर्थ जाने से पहले आचार्य शंकर ने पद्मपाद को क्या उपदेश दिया?
- सांप सीढ़ी के खेल में सांप और सीढ़ी किसका प्रतीक होता है?
- सांप सीढ़ी के खेल में एक और 100 का अंक किसका प्रतीक है?
- हलासन करने से क्या लाभ होता है?
- हलासन कैसे करना चाहिए?
- सवेरे जल्दी उठकर पानी प्रयोग कैसे करना चाहिए?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति

दीपज्योति एवं आरती

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । [A] राजा जनक को घोड़े की रकाब में पैर डालते डालते ब्रह्म ज्ञान हो गया ।

चौथा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चो, 24 मार्च को हमारे दादागुरु पूज्यपाद संतश्री लीलाशाहजी बापू का प्राकट्य दिवस है इसलिए इसी पर आज का बाल संस्कार केंद्रित है । आज की कहानी में हम आपको बताएंगे कि किस प्रकार स्वामी श्री लीलाशाह जी ने ईश्वरप्राप्ति का दृढ़ निश्चय किया और गुरु के द्वार पर पहुंचकर ब्रह्मनिष्ट संत बन गए । फिर हम जानेंगे कि उन्होंने बच्चों और विद्यार्थियों के लिए क्या शिक्षा दी । संस्कृति सुवास में हम जानेंगे की हमारे प्राचीन भारत के महान आचार्य श्री भास्कराचार्य जी का खगोल और गणित के क्षेत्र में क्या योगदान था? स्वास्थ्य सुरक्षा में हम जानेंगे कि इस मौसम में डिहाइड्रेशन क्यों होता है? उसके क्या परिणाम होते हैं? उससे बचने के लिए क्या करना चाहिए? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न, भजन और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे- पूज्य बापूजी और दादा गुरु जी के बीच की आनंदमय मधुर संस्मरण।

हमारे बापूजी श्री लीलाशाहजी बापू के बारे में कहते हैं -"लाखों-लाखों जन्म के माता-पिता जो न दे सकें वह मेरे परमपिता गुरुदेव ने मुझे हँसते-खेलते दे दिया, मुझे घर में ही घर बता दिया। मेरे सदगुरुदेव साक्षात् सच्चिदानंदस्वरूप ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं। जब तक सूर्य, चंद्र, सितारे चमकते रहेंगे तब तक आपके उपदेश से पृथ्वी पावन होती रहेगी। हे मेरे तारणहार ! आप की जय-जयकार हो !"

'हे भगवान ! सबको सदबुद्धि दो.... शक्ति दो.... आरोग्यता दो... अपना-अपना कर्त्तव्य पालें एवं सुखी रहें....'

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

अब सभी बच्चे करेंगे "ॐकार" गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें।)

3. आओ सुनें कहानी

बालक लीलारामजी की दृढनिष्ठा

हमारे पूजनीय दादागुरु श्री लीलाशाहजी का बचपन का नाम लीलाराम जी था। वे बचपन से ही कई देर तक प्राणायाम करते थे जिससे उनके स्वभाव में एकाग्रता और दृढ़ मनोबल के गुण आ गए थे। मात्र दस वर्ष की आयु से पहले ही उनके माता-पिता का देहान्त हो गया था उनके चाचा-चाची ही माता-पिता की तरह उनका ख्याल रखने लगे। उनके चाचा ने उन्हें जगत के व्यवहार एवं दुनियादारी को सिखाने के लिए उनकी बुआ के पुत्र लखुमल की दुकान पर काम करने के लिए भेजा। एक समय की बात हैः उस वर्ष सिंध और मारवाड़ में बड़ा अकाल पड़ा था। लखुमल ने पैसे देकर बालक लीलारामजी को दुकान के लिए शहर से सामान खरीद कर लाने को भेजा। उस ज़माने में तांगे और बैलगाड़ियां ही चलती थी। बालक लीलारामजी खरीदी करके माल-सामान की दो बैलगाड़ियाँ भरकर अपने गाँव लौट रहे थे। गाड़ियों में आटा, दाल, चावल, गुड़, घी आदि था। रास्ते में एक जगह पर गरीब, पीड़ित, अनाथ एवं भूखे लोगों ने बालक लीलारामजी को घेर लिया। दुर्बल एवं भूख से व्याकुल लोग जब अनाज के लिए गिड़गिड़ाने लगे तब बालक लीलारामजी का हृदय पिघल उठा। वे सोचने लगे। 'इस माल को मैं भाई की दुकान पर ले जाऊँगा, वहाँ से खरीदकर भी मनुष्य ही खायेंगे न....! ये सब भी तो मनुष्य ही हैं, तो प्रभु के नाम पर भले ये लोग ही खा लें।' उन्होंने बैलगाड़ियाँ खड़ी करवायीं

और भूख प्यास से व्याकुल लोगों में आटा दाल राशन पानी सब बांट दिया, और कहा - तुम सभी लोग इसमें से भोजन बना कर खा लो।"

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको देत है, क्या लागत है मोर।।

दोनों बैलगाड़ियों में से सारा सामान देखते-देखते पूरा ख़तम हो गया, केवल खाली बोरे रह गये। लीलारामजी को हृदय में तो बड़ा संतोष हुआ, परंतु विचार करने लगे की बुआ के लड़के भाई की दुकान है, उनके पैसे से सारा सामान आया, उन्हें क्या जवाब दूंगा ? वो भय से काँपते हुए भगवान से प्रार्थना करते जाते और बैलगाड़ियों को हांकते जाते। शाम हो गई, आखिर गोदाम तक पहुंच गए।

उन्होंने चुपचाप खाली बोरों को गोदाम में रख दिया और ताला लगा कर कुँजियाँ लखुमल को दे दीं।

लखुमल ने पूछाः "माल लाया?"

"हाँ।"

"कहाँ है?"

"गोदाम में।"

"अच्छा ! जा, तू थक गया होगा। सामान का हिसाब कल देख लेंगे।"

दूसरे दिन जब दुकान चलने का समय आया तब बालक लीलाराम जी डर के मारे काँपने लगे, क्योंकि उन्हें तो पता था कि गोदाम में खाली बोरियां है, अब क्या बोलेंगे? उनको काँपते हुए देखकर लखुमल ने कहाः "अरे! लगता है तुझे बुखार आ गया? आज घर पर आराम ही कर।"

एक दिन.... दो दिन.... तीन दिन..... बालक लीलारामजी बुखार के बहाने दिन बिता रहे हैं और भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं-

"हे करन-करावनहार स्वामी ! तू ही सब कराता है। तूने ही भूखे लोगों को खिलाने की प्रेरणा दी। अब सब तेरे ही हाथ में है, प्रभु ! तू मेरी लाज रखना।...."

उसी दिन शाम को लखुमल बालक लीलारामजी के पास आये और बोलेः "लीला.... लीला ! तू कितना अच्छा माल लेकर आया है !"

लीलारामजी घबराये, काँप उठे कि 'अच्छा माल.... अच्छा माल कहकर अभी लखुमल मेरे कान पकड़कर मारेंगे। वे हाथ जोड़कर बोलेः

"मेरे से गल्ती हो गयी।"

"नहीं बेटा ! गलती नहीं हुई। सभी चीजें बढ़िया हैं, चल, तुझे बताऊँ।"

ऐसा कहकर लखुमल बालक लीलारामजी का हाथ पकड़कर गोदाम में ले गये। बालक लीलारामजी ने वहाँ जाकर देखा तो सभी खाली बोरे माल-सामान से भरे हुए मिले और माल भी इतना बढ़िया गुणवत्ता का ! उनका हृदय भावविभोर हो उठा और गदगद होते हुए उन्होंने परमात्मा को धन्यवाद दियाः 'प्रभु ! तू कितना दयालु है.... कितना कृपालु है !' श्रीलीलाराम जी ने तुरंत ही निश्चय कियाः 'जिस परमात्मा ने गोदाम में बाहर से ताला होने पर भी भीतर के खाली बोरों को भर दिया है, अब मैं उसी परमात्मा को खोजूँगा... उसी प्यारे को अब अपने हृदय में प्रगट करूँगा।'

दृढ़ निश्चय करके वे अपनी चाची के पास आकर कहने लगे : "माँ, मैं परमात्मा की खोज करके उन्हें पाना चाहता हूँ। मुझे आज्ञा दीजिए।"

उन्होंने आजीवन विवाह न करने और ब्रह्मचर्य का पालन करने का व्रत लिया और मात्र 12 वर्ष की नन्ही आयु में संन्यास ग्रहण कर लिया, घर छोड़कर ब्रह्मज्ञानी गुरु श्री केशवानंद जी महाराज के श्री चरणों में पहुंच गए। वहां 8 वर्ष तक उनके सानिध्य में कठोर साधना की, उनकी गुरुभक्ति फली और मात्र 20 वर्ष की आयु में ब्रह्मज्ञान को पा कर मुक्त हो गए, सदगुरुदेव ने अपने अंदर ही परमानंद स्वरूप ईश्वर का अनुभव करा दिया।

स्वामी रामतीर्थ ने ऐसी उन्मत अवस्था का वर्णन करते हुए कहा हैः

लख चौरासी के चक्कर से थका, खोली कमर।
अब रहा आराम पाना, काम क्या बाकी रहा?
जानना था वो ही जाना, काम क्या बाकी रहा?
लग गया पूरा निशाना, काम क्या बाकी रहा?
देह के प्रारब्ध से मिलता है सबको सब कुछ।
नाहक जग को रिझाना, काम क्या बाकी रहा?

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - सदगुरुदेव भगवान जी की जय।

4. भजन

भजन - अब हम गाएंगे मधुर भजन -

आओ श्रोता तुम्हे सुनाऊ महिमा लीलाशाह की https://youtu.be/esGPtEX1hp4?t=7

5. ज्ञान का चुटकुला

पप्पू - यार एक बात बता...

चिंटू - बोल

"ये फेसवॉश क्या काम आता है?"

"चेहरा धोने के लिए."

“और ये शैंपू क्या काम आता है”

“बाल धोने के लिए”

“तो फिर जब चहरे पर दाढ़ी आ जाती है, तो चहरे को शैंपू से धोना चाहिए या फेसवॉश से?”

सीख :- उजुल फजूल सवाल नहीं करना चाहिए, युक्ति युक्त व्यवहार करना चाहिए.

6. संस्कृति सुवास :-

श्री भास्कराचार्य जी खगोल और गणित में योगदान

बच्चों, मुगलों के काल में प्राचीन भारत के महान इतिहास, संस्कृति, ऋषि मुनियों द्वारा की गई वैज्ञानिक खोजें और आविष्कारों की पांडुलिपियाँ और ग्रन्थ नष्ट कर दिए गए। यही कारण है कि भारत में इतनी महान वैज्ञानिक खोजों का विस्तार से ठोस प्रमाण हमें आसानी से नहीं मिलता है। तथा साथ ही मैकाले एजुकेशन सिस्टम का भी एक बड़ा दोष है कि हमें अपने ही वास्तविक प्राचीन महान इतिहास के बारे में ज्यादा

नहीं पढ़ाया जाता, बल्कि मुगलों और अंग्रेजों का इतिहास अधिक पढ़ाया जाता है।

जैसे, धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति को खोजने का श्रेय वैज्ञानिक न्यूटन को दिया जाता है। किंतु बहुत कम लोग जानते हैं कि गुरुत्वाकर्षण का रहस्य न्यूटन से भी कई सदियों पहले भारत के महान विद्वान भास्कराचार्य जी ने उजागर किया था। भास्कराचार्य जी ने अपने 'सिद्धांतशिरोमणि' नामक ग्रंथ में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बारे में लिखा है कि "पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशिष्ट शक्ति से अपनी ओर खींचती है, इस कारण आसमानी पदार्थ पृथ्वी पर गिरता है। "

भास्कराचार्य जी प्राचीन भारत के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं ज्योतिषी थे। वह प्रथम गणितज्ञ थे जिन्होनें पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा था कि कोई संख्या जब शून्य से विभक्त की जाती है तो अनंत हो जाती है। किसी संख्या और अनंत का जोड़ भी अनंत होता है।

आचार्य भास्कर जी पहले ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने स्पष्ट किया कि पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में 365.2588 दिन का समय लगता है। आश्चर्य की बात है कि

यह गणना उन्होंने बिना आधुनिक यंत्रों की सहायता से की थी और यह समय लगभग उतना ही है जितना आज का विज्ञान अपने आधुनिक यंत्रों द्वारा गणना करके मानता है।

अमरगति का सबसे पहला उल्लेख भास्कराचार्य ने ही किया है। उन्होने एक चक्र का बनाया और दावा किया है कि वह तब तक सदा घूमता रहेगा जब तक उसे बाहरी दबाव के द्वारा रोका न जाए। यही सिद्धांत आज के युग में perpetual motion कहलाता है।

उन्होंने 'करण कुतूहल' नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में बताया गया है कि जब चन्द्रमा सूर्य को ढंक लेता है तो सूर्यग्रहण तथा जब पृथ्वी की छाया चन्द्रमा को ढंक लेती है तो चन्द्रग्रहण होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उनको गुरुत्वाकर्षण, चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण की बहुत ही प्रमाणिक जानकारी थी।

आचार्य भास्कर जी का खगोल और गणित के क्षेत्र में बहुत अधिक योगदान था इसलिए उन्हीं के नाम पर 7 जून 1979 को छोड़े गए उपग्रह का नाम भास्कर प्रथम और नवंबर

1981 को छोड़े गए द्वितीय उपग्रह का नाम भास्कर - 2 रखा गया था।

7. क्या करें क्या न करें ?

बच्चों, आईए अब हम जानते हैं कि पूज्य दादागुरूजी ने बच्चों और विद्यार्थियों के लिए क्या शिक्षा दी है -

सिनेमा से बचना चाहिए, उस समय लोग सिनेमा देखते थे, आजकल उसी का स्वरूप और भी विकृत हो गया है। छोटे-छोटे बच्चों को मोबाइल फोन की लत लग जाती है और इंटरनेट पर वीडियो क्लिप आदि देखने से बच्चो की मानसिकता खराब हो जाती है जिससे बच्चों के स्वभाव में चिड़चिड़ापन, मूड स्विंग होना जैसी शिकायतें आजकल सब जगह पाई जाती है। बच्चो को हमेशा मोबाइल टीवी सिनेमा इन सबसे को दूर ही रहना चाहिए। आप मन को दृढ़ करेंगे तो इनसे बचना मुश्किल बात नहीं है।

कुसंग से हमेशा बचना चाहिए, अच्छी संगत हमेशा पार उतारती है। बुरी संगत डुबोती है। इसलिए अच्छे लोगों की ही संगत करनी चाहिए। रानी कैकयी को राजा दशरथ से बेहद

प्यार था परन्तु मंथरा के कुसंग के कारण उसके मन के संकल्प बिगड़ने लगे तथा राजा दशरथ से राम को वनवास भेजने का वचन माँगकर वह राजा की मृत्यु का कारण बनी। यह है कुसंग का फल। सत्संग करने के अलावा अच्छी पुस्तकों का संग करना चाहिए।

भगवान के भजन करने के लिए शरीर को निरोग रखना चाहिये। इसके लिये संयम का पालन करना चाहिये. मातृदेवो भव । पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथिदेवो भव। माता-पिता,आचार्य,गुरु व अतिथि को देवता के समान पूजनीय समझना चाहिए। यह बड़ा धर्म है। व्यायाम व प्राणायाम किया करना चाहिए, जिससे तन-मन स्वस्थ रहे।

सात्विक व हजम होने वाला भोजन करना चाहिए। भोजन शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खाना चाहिए, न कि स्वाद पाने के लिए। दिन में दो बार से अधिक भोजन नहीं करना चाहिए।

अंधे या भूले हुओं को राह दिखाना, प्यासों को पानी पिलाना व भूखों को खाना देना भी धर्म समझना चाहिए।

प्रभु का स्मरण भी करते रहना चाहिए क्योकिं वह सुखों का दाता है।

8. स्वास्थ्य सुरक्षा

प्रातः पानी प्रयोग

रात भर तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर बिना मुँह धोये, बिना ब्रश किये करीब आधा लीटर, बच्चों के लिए एक गिलास कुनकुना पानी एक साथ पी लें।

पानी पीने के बाद मुँह धो सकते हैं, ब्रश कर सकते हैं। पानी पीने के 45 मिनट तक कुछ भी खायें-पियें नहीं। इस प्रयोग से कई प्राणघातक बीमारियाँ दूर हो जाती है, पानी की कमी से होने वाले अधिकतर रोग इस प्रकार के पानी प्रयोग से नहीं होते हैं, तथा शरीर स्वस्थ रहता है.

9. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की। आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको

10 सेकंड में सही उत्तर बताना है। प्रश्न है-"पूज्य दादागुरुजी लीलाशाह जी का जन्म और उनका बाल्य काल कहां हुआ था?"

विकल्प है -

A) सिंध प्रदेश में

B) महाराष्ट्र में

C) सौराष्ट्र में

D) मारवाड़ में

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा।

10. गतिविधि

बच्चों, आज हम सब मिलकर बाल संस्कार के ब्लेक बोर्ड को एक सुन्दर प्रार्थना लिखकर सजायेंगे । यह प्रार्थना दादागुरुजी की प्रिय प्रार्थना थी वे हमेशा यह प्रार्थना करवाते थे ।

'हे भगवान ! सबको सदबुद्धि दो.... शक्ति दो.... आरोग्यता दो... अपना-अपना कर्त्तव्य पालें एवं सुखी रहें....'

रंगीन चोक से बोर्ड पर लिखकर और डिजाइन बनाकर उसे सजायेंगे।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bI57Gh3T4ps

(कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

सत्संग - अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे- गुरुवर की आनंददायी गाथाएँ..

https://youtu.be/tLIvBq9qixQ

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- स्वामी लीलारामजी को बचपन में प्राणायाम करने से क्या लाभ हुआ?
- लीलाराम जी ने बैलगाड़ियों में रखा दुकान के लिए खरीदा गया अनाज गरीबों में क्यों बांट दिया?

- लीलाराम जी का हृदय गोदाम देखकर क्यों भाव विभोर हो उठा?
- लीलाराम जी ने क्या दृढ़ निश्चय किया?
- लीलाराम जी ने किनको अपना गुरु बनाया?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- दादागुरु जी ने विद्यार्थियों और बच्चों के लिए क्या शिक्षाएं दी? सभी बच्चे एक-एक शिक्षा बताएंगे.
- भास्कराचार्य जी का खगोल और गणित में क्या योगदान था? सभी बच्चे एक-एक योगदान बताएंगे.
- डिहाइड्रेशन से बचने के लिए क्या करना चाहिए?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति

आरती - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

<u>दीपज्योति एवं आरती</u> -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है - (A) ऋषि दुर्वासा

****